ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 1.9152(UIF) VOLUME - 4 | ISSUE - 4 | DECEMBER - 2017

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

कस्तूरी कुंडल बसै उपन्यास में नारी संवेदना

डॉ. सौदागर सालुंखे

प्रस्तावना:

कस्तूरी कुंडल बसै आपबीती एवं स्वकथन है द्यजो मैं की शैलीमें लिखा गया है द्यजो बहुचर्चित लेखिका मैत्रेयी पुष्पा एवं उनकी माँ कीजीवन गाथा है। अपनी बेटी के लिए एक नई दुनिया का सृजन करनेवालीमाँ की दास्तान यह उपन्यास है। जिस में कस्तूरी का संघर्षमय एवंविद्रोही जीवन पाठकों के समक्ष लेखिका ने उपस्थित किया है। नारीअस्मिता एवं चेतना की कहानी यह उपन्यास है। पुरुष प्रधान संस्कृति मेंसमाज के कड़े बंधनों में जकड़ी हुई कस्तूरी आत्मनिर्भर होने के लिएकिस-किस दौर से गुजरती है। ऐसी विलक्षण अनुभूतियाँ इसमें मिलतीहैए जिसमें माँ बेटी के जीवन की सच्चाई परिलक्षित होती है तथा उनकेसंबंधों की संवेदना से पाठक भी अनुभुति देते हैं । नारी की आत्मनिर्भरताएवं नारी का शोषण के खिलाफ तीखा स्वर यहाँ निकलता है।

एक सोलह साल की लड़की कस्तूरी अपनी माँ से कहती है मेंब्याह नहीं करूगी क्योंकि शादी के संबंध में उसके मन में बहत डर भराहुआ है । जिस लड़की के मन में शादी को लेकर इतना डर दिखाई देताहै, इससे यह स्पष्ट होता है कि हमारी परंपरा, रूढ़ियाँ, समाज के बंधनआदि का मतलब क्या है । क्या वह सब ढकोसले है ? हमारे नीतिनियमएवं मान्यताओं पर कहाँ कस्तूरी सीधी उंगली उठाती है । माँ के मन मेंइस बात का डर बैठ गया है कि बेटी अपना जीवन अकेले कैसे बिताएगी। माँ झूठी शान, एवं इज्जत के पिछे पड़ी है तो बेटी शादी के पश्चातनरक यातना भोगने से बचना चाहती है। माँ शादी, परिवार एवं समाजमें विश्वास करती है |तो बेटी को इन बातों पर विश्वास नहीं । झूठीशानशौकत के लिए कस्तूरी अपना जीवन कुर्बान नहीं करना चाहती।लेकिन घरवालों के दबाव के आगे उसकी एक नही चलती तथा न चाहतेहुए भी अपनी मर्जी के खिलाफ कस्तूरी की हीरालाल से शादी करनीपड़ती है।वह अपना निर्णय स्वयं लेती है उसका जीवन आत्मविश्वास सेलबालब है । दृढ़ निश्चयी एवं निर्णय लेने की क्षमता रखनेवाली नारी के रूप में उसकी पहचान यहाँ होती है, शीला झुनझुनवाला कहती है किभारत में नारी को अधिकार मिले वे किसी विद्रोह के फलस्वरूप नहींमिले, न ही पुरुषों के विरुद्ध मोर्चा खोलकर वे अधिकार महिलाओंको नहीं दिए गए, बल्कि भारतीय स्त्री ने अपनी योग्यता तथा कार्यकुशलताकी स्वीकृति के आधार पर इन्हें प्राप्त किया है। नारी की सहजभावनाओं का त्याग करने पर ही वे अपनी कामना पूरी कर सकती है|कस्तूरी ने जब देखा कि पुरुष प्रधान समाज में न्याय और

अन्याय हो रहाहै इसका एक ही उपाय, शिक्षा है ऐसा उसे लगता है| कस्तूरी ने समाजके सारे बंधन तोड़कर अपना उद्देश्य ही महत्वपूर्ण माना और उसे ही पूराकरने में वह अग्रेसर रही गाँव की औरते कहती रही यह रॉड क्या हुईसांड हो गई। न छोरी पर ममता न बूढे ससुर का रहम । पढ़ाई-पढ़ाई काभजन करती हुई दोनों को रौंद रही है। गाँव देहांत की नारियाँ मानतीहै कि पढ़-लिखकर कस्तूरी क्या करेगी वह पढ़ाई के आगे किसी कोकुच नहीं समझती अनपढ़ लोग क्या सोचते है यह यहाँ स्पष्ट होता है|

पति की मौत के बाद भाईयों ने उसके खेतों पर कब्जा करनाचाहा पर कस्तूरी ने हार नहीं मानी तथामैकेवालों से संबंध तोड़करस्वार्थ पर कस्तुरी ने अंकुश लगा दिया । तथा बिना किसी की सहायता के अपनेबलबूते पर अपने जीवन को दिशा दी। पुराने विश्वासों और नईमान्यताओं के बीच जूझती स्त्री अपने अस्मिता की पहचान चाहती है।उसका आर्थिक रूप से आत्मनिर्भरता का स्वाभिमान की रक्षा का रूपनजर आता है। साहित्य ने स्त्री के इसी संघर्ष को बल प्रदान किया है।नए मूल्य एवं विचारों में जब टकराव उत्पन्न होता है तब सामाजिकपरिवर्तन तो लाजमी बन जाता है। नारी आज अपने पैरों पर खड़ी होकरअपने नए जीवन मूल्य स्थापित करना चाहती है। उसका यह रूप अन्यस्त्रियों को एक नयी दिशा प्रदान करता है।

कस्तूरी ने बेटी के संबंध में जो सपने संजोए थे सारे टुटकरबिखर जाते है । तब उसे लगता है कि बेटी के लालन-पालन में कोईकमी रह गई है जो बेटी इस प्रकार के विचार व्यक्त कर रही है। जोऔरत अपनी बेटी के सुनहरे भविष्य को लेकर गांव वालों से समाज से,मूल्यों से संघर्ष करती है उसी की बेटी की यह सोच उसे तोड़ देती है| मैत्रेयी ने जो विचार व्यक्त किए थे उसका भी कारण परंपरा थी|बचपनसे ही शिक्षा एवं नौकरी के कारण मैत्रेयी से दूर रही। उसे पढ़ने-लिखनेके बजाय गाँव की बूढ़ी महिलाओं के साथ गीत गाने में अधिक रूचि थी। बचपन से जिन पुरुषों के संपर्क में वह आई उन्होंने उसपर अत्याचारकिया और इसलिए मैत्रेयी ने माँ से अपनी शादी कराने की जिद की थी। जब एक दिन माँ ने महसूस किया कि घर में लड़की जवान हो रहीहै,बढी हो रही है। माँ को डर भीतर से कंपा देता है कि बाप की हवसका शिकार बेटी न हो जाए। इसलिए वह बेटी की जिम्मेदारी से जल्दीसे जल्दी अपने को मुक्त करने का मनसुबा सोचती है । जिसे उसनेशक्ल सूरत से भी पसन्द नहीं किया उसके अपने घर में उसी के कमरेमें माँ की मौजूदगी में लूट लेता है। यह एक रोज की नही रोज-रोज कीघटना बन जाती है |वह अपने आपको बचाने की कितनी भी कोशिशकर ले पुरुषों की वासना का शिकार होने से उसका बचना मुश्किल होरहा है |

कस्तूरी कइल बसै नारी जीवन को उजागर करनेवाला एकस्त्री अंतर्बाहायजगत को विशद करनेवाला महत्वपूर्ण उपन्यास है।आत्मनिर्भरता, अस्नित्ववोध, स्वाभिमान, अधिकार बोध, स्वतंत्रता आदिविषयों को जोरदार रूप में सशक्त स्त्री पात्र कस्तूरी के द्वारा अंकित किएहै |जो स्त्री मुक्ति आंदोलन का अहम हिस्सा है। इन्हीं विषयों को साथलेकर कस्तूरी नायिका के रूप में अग्रेसर है। अपने जीवन के अनुभव एवं संघर्षों के द्वारा लेखिका मैत्रेयी पुष्पा ने उसे उजागर करने कासफल प्रयास किया है स्त्री की शक्ति बडी व्यापक तथा असीम हैजिसका एहसास स्त्री को नहीं। जिस प्रकार कस्तूरी मृग की नाभी मेंकस्तूरी होती है। अपने जीवन में जो कुछ घटित होता है वही अपनानसीब है ऐसा माननेवाली गुलाम की जिंदगी जीनेवाली साधारण नारियोंके लिए एक आदर्श प्रस्तुत करता है।